जैन मुनिश्री प्रणम्य सागरजी महाराज का प्राकृत साहित्य को अवदान

धरणेन्द्र जैन (अतिथि व्याख्याता)
जैनविद्या एवं प्राकृत विभाग,
मो. सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर राज. 313001
Mob. 9782864471
Email–mr.dharnendrajain@gmail.com

प्राकृत साहित्य भारतीय श्रमण परम्परा की आत्मा है। जैन आगमों की मूल भाषा प्राकृत रही है, जिसके माध्यम से तीर्थंकरों का उपदेश जनसामान्य तक पहुँचा। कालान्तर में संस्कृत, अपभ्रंश और आधुनिक भाषाओं के वर्चस्व के कारण प्राकृत का अध्ययन सीमित होता गया। वर्तमान में जिन मनीषियों ने प्राकृत भाषा और साहित्य के संरक्षण, अध्ययन और प्रचार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है, उनमें मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उनका कार्य केवल भाषिक या व्याख्यात्मक नहीं है, बल्कि वह दर्शन, अध्यात्म और सामाजिक तीनों स्तरों पर प्राकृत साहित्य को पुनः जीवंत करता है।

जैन दर्शन का मूल स्वरूप प्राकृत साहित्य में ही सुरक्षित है। आचार (Conduct), विचार (Thought), साधना (Practice) तीनों का समन्वय प्राकृत आगमिक ग्रंथों में मिलता है। प्राकृत भाषा की विशेषता यह है कि वह लोकभाषा होते हुए भी गहन दार्शनिक तत्त्वों को सरलता से व्यक्त करती है। मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज इसी विशेषता को अपने प्रवचनों और अध्ययन में केन्द्र में रखते हैं।

मुनिश्री प्रणम्यसागरजी – जीवन परिचय

सन्तशिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के प्रमुख शिष्य मुनिश्री प्रणम्यसागर प्राकृत, संस्कृत, हिन्दी तथा अँग्रेज़ी के अच्छे ज्ञाता तथा जैन आगम के कुशल अध्येता हैं। आपका जन्म भोगाँव (मैनपुरी, उत्तरप्रदेश) में 13 सितंबर, 1975 को हुआ। आपने सिरसागंज (फ़िरोज़ाबाद) से बी.एस-सी किया। आपने आचार्य श्री विद्यासागरजी मुनिराज से 9 अगस्त, 1994 को ब्रह्मचर्य व्रत, 9 अगस्त 1997 को क्षुल्लक दीक्षा, 5 जनवरी 1998 को ऐलक पद और 11 फरवरी 1998 को सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि (मध्यप्रदेश) में मुनि दीक्षा प्राप्त की। सन 2006 तक आचार्य संघ में रहने के पश्चात् पृथक विहार करते हुए जिनधर्म की प्रभावना के साथ अन्तरंग विशुद्धि को बढ़ाते गए साथ ही प्राकृत और संस्कृत भाषा पर दक्षता हासिल की।

साहित्य सृजन :-

अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, प्राकृत भाषा मर्मज्ञ परम पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज चार भाषाओं – हिन्दी, संस्कृत, प्राकृत और अंग्रेजी का ज्ञान रखते हैं। इन चार भाषाओं में पूज्य मुनि श्री ने 150 से भी अधिक ग्रंथों, टीका ग्रंथों, काव्यों, पद्यानुवादों, स्तोत्र आदि की रचना की।

पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज की लेखन क्षमता अद्भुत है। उनकी कलम से निरंतर नए-नए ग्रंथों और कृतियों की रचना होती रहती है। ऐसा लगता है ज्ञान का अथाह सागर पूज्य मुनि श्री अपने में समाए हुए हैं। उनके ज्ञान की पराकाष्ठा को देखकर ही - अभीक्ष्ण ज्ञान उपयोगी, वर्तमान में श्रुत केवली, जैन दर्शन के परम ज्ञाता, प्राकृत भाषा मर्मज्ञ, महा योगीराज, ज्ञान के सागर, विद्या के सागर आदि उपाधियों से उन्हें विभूषित किया जाता है।

पूज्य मुनि श्री के साहित्य को निम्नांकित भागों में बांटा गया है –

(1) संस्कृत भाषा में टीका ग्रंथ (2) हिंदी में अनुवादित ग्रंथ, (3) पद्यानुवाद,

(4) प्रवचन ग्रंथ, (5) संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रंथ, (6) प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रंथ,

(7) अन्य मौलिक कृतियां, (8) संकलन, (9) अंग्रेजी भाषा में पुस्तकें आदि

प्राकृत भाषा में मौलिक ग्रन्थ :-

1. तित्थयर भावणा (सोलहकारण भावनाओं पर प्राकृत गाथाएँ)

2. दार्शनिक प्रतिक्रमण

3. अष्टपाहुड़ (प्राकृत टीका 1-6)

4. धम्मकहा

5. धम्मपह सदगं

6. प्राकृत रचना भास्कर

7. गोम्मटेस पडिमा भत्ति, चउबीस जिण भत्ति

8. प्राकृत शिक्षा भाग 1-2-3-4

9. गोयम गणहर थुदि वडढमाण थुदि, पसण्णकरी थुदि, पड़िग्गहण विही

पूज्य मुनि श्री के द्वारा रचित साहित्य में अनेक तरह की varieties देखने को मिलती हैं। इसमें संस्कृत भाषा में श्री वर्धमान स्तोत्र, स्तुति पथ, श्रायस पथ, अनासक्त महायोगी जैसी प्रसिद्ध रचनाएं हैं। दूसरी तरफ प्राकृत भाषा में सोलह कारण भावनाओं पर आधारित तित्थयर भावणा, धम्मकहा, गोम्मटेस पंडिमा भत्ति जैसी दुर्लभ और अनोखी कृतियां हैं।

संस्कृत भाषा और उसके व्याकरण का ज्ञान पूज्य मुनि श्री ने स्वयं अभ्यास द्वारा प्राप्त किया और इन भाषाओँ में अभूतपूर्व कुशलता प्राप्त की। प्राचीन और महत्वपूर्ण अनमोल ग्रंथों पर पूज्य मुनि श्री ने इसी अद्भुत लेखन क्षमता का उपयोग

करते हुए, संस्कृत टीकाएँ लिखकर सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। इन ग्रंथों पर एक लंबे समय के बाद इस तरह की संस्कृत टीकाएँ लिखी गई है।

युवाओं के लिए विशेष रूप से Fact of Fate, खोजो मत पाओ, लक्ष्य, जिंदगी क्या है, बेटा जैसी पुस्तकें पूज्य मुनि श्री ने लिखी हैं। योग के ऊपर अर्हम ध्यान योग पुस्तक पाठकों को आकर्षित करती है। इसके अतिरिक्त अन्तर्गूंज (भजन एवं हाइकू) और लहर पर लहर (कविता संग्रह) अपने आप में बहुत interesting और अनुपम रचनाएं हैं। सभी ग्रंथों और रचनाओं की भाषा बहुत सरल है, शैली बहुत रोचक और स्पष्ट है।

इस साहित्य में अनेकों उदाहरणों के माध्यम से विषय को समझाया गया है, साथ ही जीवन में आने वाली अनेक समस्याओं और मन में उठने वाली जिज्ञासा और प्रश्नों का solution और जवाब भी हमें इन ग्रंथों और रचनाओं में मिलता है। कुछ रचनाएं छोटी होने के बावजूद भी जैसे "गागर में सागर" को समाए हैं। अनेक प्राचीन ग्रंथों के कठिन समझे जाने वाले विषय को इतना easy बना दिया गया है कि पाठक आश्चर्य से भर जाते हैं।

नए-नए ग्रंथ और टीकाओं की रचना कर जैन आगम को विकसित करने और उसे विविधताओं से भरने में पूज्य मुनि श्री का अमूल्य योगदान है और यह योगदान निरंतर जारी है।

मुनि श्री का योगदान केवल वर्तमान तक सीमित नहीं है। वे भविष्य के लिए यह संदेश देते हैं कि —

- प्राकृत का अध्ययन अनुवाद पर निर्भर न रहे
- मूल ग्रंथों से सीधा संवाद हो
- साधु - साध्वी और श्रावक - सभी प्राकृत से जुड़ें

यह दृष्टि प्राकृत साहित्य के संरक्षण की दीर्घकालीन योजना प्रस्तुत करती है।

तित्थयर भावणा :- इसमें कुल 131 गाथाएं हैं। सोलह कारण भावनाओं के ऊपर प्राकृत भाषा में निबद्ध यह प्रथम कृति है इससे पूर्व में सोलह कारण के उपर कोई प्राकृत भाषा में कृति पढ़ने में नहीं आई। पूज्य मुनि श्री ने इस कृति का नामकरण तित्थयर भावणा रखा है। इसमें भावना शब्द का प्रयोग सोलह कारण के लिये पूर्व के आचार्यों ने नहीं किया अतः यह शोध का विषय है कि भावना शब्द को सोलह कारण से क्यों जोडा गया। सोलह कारणों का सर्वप्रथम नामोल्लेख धवला पुस्तक 8 सूत्र 41 में मिलता है। पश्चात् आचार्य उमास्वामी ने तत्वार्थसूत्र के सप्तम अध्याय में तीर्थंकर नामकर्म के आश्रव हेतु सोलह कारणों का उल्लेख किया है। आचार्य पूज्यपाद स्वामी ने तात्वार्थ सूत्र की टीका सर्वार्थसिद्धि में भी सोलह कारणों को तीर्थंकर नामकर्म के आश्रव का हेतु ही माना है इन्होंने भी भावना शब्द का प्रयोग नहीं किया। आचार्य अकलंक देव ने राजवार्तिक में तथा आचार्य विद्यानंद जी ने तत्त्वार्थवार्तिक अलंकार में भी कहीं भावना शब्द का उल्लेख नहीं किया।

षट्खण्डागम सूत्र में कहा है कि

'तत्थ इमेहि सोलसेहि कारणेहि जीवा तित्थयर णामगोदकम्मं बंधंति।' ध. पु. ८ सूत्र ४०

अर्थात् वहाँ इन सोलह कारणों से जीव तीर्थंकर नाम गोत्र कर्म का बंध करते हैं।

मुख्य पुरुषार्थगम्य भावात्मक अन्तरङ्ग कारण तो सोलह भावनाएँ हैं। केवलि द्विक का सान्निध्य तो सामान्य कारण है इसलिए उसका कथन सूत्र ग्रन्थ में नहीं कहा है। तत्त्वार्थ सूत्र में भी इन सोलह कारण भावनाओं को तीर्थंकर बंध का कारण कहा है। केवली द्विक का सान्निध्य सामान्य कारण है, इसलिए अन्वय-व्यतिरेक सम्बन्ध का अभाव होने से उसका यहाँ कथन नहीं है।

सोलहकारण भावनाएँ जो तत्त्वार्थ सूत्र के छठवें अध्याय में वर्णित हैं उन्हीं का जन सामान्य में प्रचलन अधिक है। षट्खण्डागम सूत्र में भी उन सोलह कारण भावनाओं का वर्णन है। आचार्य उमास्वामी जी से भी प्राचीन आचार्य भूतबली द्वारा रचित उन भावनाओं के क्रम और नाम में कुछ अन्तर है। यह अन्तर जानने के लिए यहाँ प्राकृत और संस्कृत दोनों मूल ग्रन्थों के नाम व क्रम को एक साथ तुलनात्मक रीति से देखते हैं-

षट्खण्डागम सूत्र में (प्राकृत)	**तत्त्वार्थ सूत्र में (संस्कृत)**
१. दर्शनविशुद्धता	१. दर्शनविशुद्धि
२. विनय सम्पन्नता	२. विनय सम्पन्नता
३. शीलव्रतों में निरतिचारता	३. शील, व्रतों में अनतिचार
४. छह आवश्यकों में अपरिहीनता	४. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग
५. क्षण-लव-प्रतिबोधनता	५. अभीक्ष्ण संवेग
६. लब्धि संवेग सम्पन्नता	६. शक्तितः त्याग
७. यथाशक्ति तथा तप	७. शक्तितः तप
८. साधुओं की प्रासुक परित्यागता	८. साधु समाधि
९. साधुओं की समाधि संधारणता	९. वैयावृत्यकरण
१०. साधुओं की वैयावृत्य योगयुक्तता	१०. अर्हद्भक्ति
११. अरहन्त भक्ति	११. आचार्य भक्ति

१२. बहुश्रुत भक्ति	१२. बहुश्रुत भक्ति
१३. प्रवचन भक्ति	१३. प्रवचनभक्ति
१४. प्रवचन वत्सलता	१४. आवश्यक अपरिहाणि
१५. प्रवचन प्रभावना	१५. मार्ग प्रभावना
१६. अभीक्ष्ण-अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगयुक्तता	१६. प्रवचन वत्सलत्व

इस तरह हम देखते हैं कि चौथी भावना से क्रम एवं नाम में अन्तर दिखने लगता है। षट्खण्डागम सूत्र में कुछ नाम ही भिन्न दिखते हैं, इनका अर्थ श्रीधवला टीका में जो लिखा है उसी को यहाँ मात्र लिखते हैं

इन दोनों परम्पराओं को देखते हुए सर्वत्र प्रचलित और मान्य परम्परा रूप से जो भावनाएँ तत्त्वार्थ सूत्र में वर्णित हैं, उन्हीं के अनुसार मुनि श्री ने अपने ग्रन्थ में प्राकृत भाषा में क्रम रखा है। मात्र 'शक्तितः त्याग' भावना का नाम **'पासुग परिच्चागदा' अर्थात् प्रासुक परित्याग** भावना दिया है, ताकि षट्खण्डागम सूत्र की परम्परा का समावेश भी हो जाय और भव्य जनों को यह परम्परा भी ज्ञात हो । तित्थयर भावना ग्रन्थ 131 गाथाओं सहित हिन्दी व्याख्या के साथ लिखा गया है । मुनि श्री ने पद्यानुवाद और अन्वयार्थ करके इसको परिपूर्ण सुगम बनाने का प्रयास किया है ।

धम्मपह सदगं :-

धर्मपथशतकम् यह ग्रंथ शौरसेनी प्राकृत में लिखा गया है इसमें कुल 105 पद्य हैं "जिनमें 104 पद्य उपजाति छन्द में तथा 105 वां पद्य गाया छन्द (आर्या छन्द) में है ।"[1] प्रथम छन्द में भगवान आदिनाथ को नमस्कार किया गया है । तृतीय छन्द में ज्ञान और ध्यान को धर्म कहा गया है । यह धर्म का विशिष्ट लक्षण है। आगे जिनवाणी की महिमा वैराग्य, समभाव, राग का लक्षण, राग संसार का हेतु, छंद संख्या 11 से 20 तक गौतम गणधर स्वामी की स्तुति, पद्य संख्या 24 से 30 तक सनातन धर्म का स्वरूप बताते हुए लिखा है कि -

रागादिजुत्तस्स हि कम्मबंधो रागादिमुक्को मुयदि त्ति कम्मं ।

संखेवरूवेण जिणोवदेसो एसो हि धम्मोत्थि सणंतणो णु ।।24।।

अर्थ – रागादि से युक्त जीव को निश्चय से कर्म बंध होता है। रागादि से मुक्त जीव कर्म छोड़ता है। इस प्रकार संक्षेप रूप से जिनेन्द्र भगवान् का यह उपदेश ही सनातन धर्म है ।

रागादिभावस्स विहाणिभूदे णरे विवेगो सुवियारसत्ती।

---

[1] धम्मपह की प्रस्तावना, ब्र. धर्मेन्द्र भैया

णिप्पक्खदिट्ठी करेदि णायं एसो हि धम्मोत्थि सणंतणो खु ।।25।।

अर्थ – रागादिभाव की हानि होने पर मनुष्य में विवेक और श्रेष्ठ विचार की शक्ति आती है । तभी वह मनुष्य निष्पक्ष दृष्टि वाला होता है। ऐसा मनुष्य ही न्याय करता है। यही वास्तव में सनातन धर्म है ।

आगे समझाया कि ईश्वर जगत का कर्ता नहीं है, मिध्यात्व के भेद, अहं बुद्धि का त्याग, विशुद्ध सुख के संदर्भ में लिखा है कि -

ण तं सुहं जं परदुक्खहेतुं परेण पत्तं णियमेण दुक्खं ।

णिजीयसोक्खं हि विसुद्धसोक्खं इच्छेदि जो तं परमप्पबुद्धो ।।35।।

अर्थ – वह सुख नहीं है जो दूसरों के दुख का कारण हो । दूसरे से प्राप्त किया गया सुख नियम से दुःख है। अपना निजी सुख ही विशुद्ध सुख है । जो उस सुख की इच्छा करता है वही परम प्रबुद्ध है ।

दश धर्मों का स्वरूप, कषायों के परिणाम, दशधर्म कैसे प्रकट होते है, सम्यक्त्व के आठ अंगो का सहज और सरलता से वर्णन किया है । धर्मध्यान व शुक्लध्यान का वर्णन करते हुये अंत में अर्हम् योग का विस्तृत वर्णन किया है । धम्मपह ग्रंथ में मुनि श्री ने अध्यात्म, व धर्म के संबंध में अपना मौलिक चिंतन प्रस्तुत किया है जो कि अपने में विशिष्ट है। पूज्यश्री ने अध्यात्म की गहराई में गोते लगाकर उस अनुभव से जो नवनीत निकला है उसे इस ग्रंथ में भर दिया है । इस ग्रंथ में मुनिश्री ने प्राकृत शब्दों की हिन्दी (शब्दार्थ) के साथ उसका अंग्रेजी अनुवाद भी दिया है जिससे पाठकों को समझने में और भी सरलता महसूस होती है ।

धम्मकहा :-

प्राकृत वाङ्मय में दिगम्बर जैन कथाओं का गद्य शैली में रचित प्रथम ग्रन्थ धम्मकहा है। इस ग्रंथ में दो प्रकार की कथाएं हैं प्रथम संवेगिनी कथाएं जो कि धर्म के फल का विस्तार से वर्णन करती है। द्वितीय- निर्वेजनी कथाएं जो कि वैराग्य उत्पन्न करने वाली है । संवेगिनी कथाओं के अंतर्गत अंजनचोर, उद्दायन राजा, अनन्तमती, रेवती रानी, जिनेन्द्र भक्त सेठ, वारिषेण मुनि, विष्णु कुमार मुनि, वज्रकुमार मुनि, यमपाल चाण्डाल, धनदेव, नीली, जयकुमार, धनश्री, सत्यघोष, तापस, यमदण्ड कोट्टपाल, श्मश्रुनवनीत, श्रीसेन राजा, वृषभसेन, कोण्डेश ग्वाला, सूकर, मेंढक, सुकौशल मुनि, चाणक्य मुनि की कथाएं हैं। निर्वेजनी कथाओं के अंतर्गत सोलह कारण कथाएं है, जिनके नाम निम्नांकित है - कथाओं का सर्वाधिक वर्णन पुराणों में मिलता है । प्राकृत भाषा में अपनी दक्षता हामिल करने के लिये प्राकृत कथाओं को पढ़ना श्रेयस्कर होता है ।

अष्टपाहुड (प्राकृत टीका, 1-6)

आचार्य कुन्दकुन्द विरचित षट्पाहुड पर लिखी गई प्राकृत भाषा में यह प्रथम टीका ग्रन्थ है। इस टीका का नाम भी नन्दिनी टीका है। लिंगपाहुड़ और शीलपाहुड़ पर पहले लिखी गई उसी आधार पर इस टीका का नाम भी नन्दिनी टीका रखा गया है। मंदसोर जनपद मध्यप्रदेश में वर्षायोग 2015 के समय यह टीका लिखी गई।

इस टीका ग्रन्थ में कुन्दकुन्दाष्टक, आचार्य श्री विद्यासागर कृत पद्यानुवाद, टीका की उत्थानिका, गाथा का अन्वयार्थ, प्राकृत टीका, उसका हिन्दी अर्थ सभी कुछ एक साथ निबद्ध है। प्रत्येक पाहुड़ के अन्त में गाथा और टीका का प्राकृत शब्दकोश संकलित है जो प्राकृत के अध्येताओं के लिए बहुत उपयोगी है। परिशिष्ट में गाथाओं का मूलपाठ और टीका में प्रयुक्त सन्दर्भ ग्रन्थों की सूची भी दी है जो शोधकर्ताओं के लिए उपयोगी है। इसके अतिरिक्त आचार्य श्री ज्ञानसागर (गुरुणां गुरु) का पद्यानुवाद भी निवद्ध है। यह पद्यानुवाद कभी पुरानी पत्रिका में छपा था। अभी तक यह अप्रकाशित था। इस पद्यानुपाद में कई पद्य छूटे हैं। जितना भी उपलब्ध हुआ वह सुरक्षित किया गया है।[2]

प्राकृत रचना भास्कर एवं प्राकृत शब्दकोश

इस कृति में क्रमशः प्राकृत के संज्ञा, सर्वनाम शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा प्राकृत अभ्यास रचना के प्रयोग, दिये गये हैं। इस कृति के अन्त में आचार्य नेमिचन्द्र द्वारा रचित द्रव्यसंग्रह की प्रारम्भिक 14 गाथाओं का अन्वय और अर्थ देकर उसकी व्याकरणात्मक पृष्ठभूमि स्पष्ट की गई है जिसका उद्देश्य स्वाध्याय की प्रवृत्ति को जागृत करना है। प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी के लिए व अभ्यास के लिए कृति अत्यन्त उपयोगी है। प्राकृत भाषा सीखने वालों को यह पुस्तक अवश्य पढ़नी चाहिए।[3]

दार्शनिक प्रतिक्रमण :-

अव्रती श्रावकों के लिये मुनि श्री द्वारा रचित दार्शनिक प्रतिक्रमण अत्यधिक उपयोगी है। क्योंकि गृहत्यागी साधुओं के लिये पूर्वाचायों ने प्रतिक्रमण लिखे है। तथा व्रती श्रावकों के लिये भी आगम में प्रतिक्रमण लिखे जा चुके हैं। परन्तु वह श्रावक जो अव्रती है व्रत संयम की इच्छा रखाता है उसके लिये कौन सा प्रतिक्रमण करना चाहिये ? यहाँ इस अभाव को पूज्य श्री ने पूर्ण किया है। आपने अपनी प्रतिभा से प्राकृत भाषा में यह प्रतिक्रमण, लिखकर इसका हिन्दी अर्थ भी लिखा है जो कि व्रती श्रावकों के लिये अत्यधिक उपयोगी है। शौरसेनी प्राकृत में लिखे गये इस प्रतिक्रमण में गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं का प्रयोग किया गया है।

पाइय सिक्खा (प्राकृत शिक्षा) भाग-1

'पाइय सिक्खा भाग-1' पुस्तक में मुनिश्री 108 प्रणम्यसागर जी महाराज ने मुख्य रूप से प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी, चौबीस तीर्थकरों के चिह्न सहित प्राकृत भाषा में नाम, प्राकृत संख्या, णमोकार मंत्र आदि के साथ-साथ प्राकृत भाषा के संज्ञा-सर्वनाम, शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूप, क्रिया विशेषण शब्द और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा अभ्यास पाठ (वाक्य निर्माण विधि) इत्यादि दिये गए हैं।

पाइय सिक्खा (प्राकृत शिक्षा) भाग-2

---

[2] अष्टपाहुड पर नन्दिनी टीका की प्रस्तावना

[3] सुत्तपाहुड पर नन्दिनी टीका की प्रस्तावना, प्राचार्य श्री चंद जैन

'पाइय सिक्खा भाग-2' पुस्तक में मुनिश्री ने प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी, प्राकृत संख्या, प्राकृत में इन्द्रिय, परमेष्ठी, चौबीस तीर्थंकर स्तुति, प्राकृत कथा, सूखे फलों एवं फूलों के नाम के साथ-साथ प्राकृत के संज्ञा, सर्वनाम, शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूप, क्रिया विशेषण और प्राकृत भाषा के सामान्य नियमों की जानकारी तथा अभ्यास पाठ (वाक्य निर्माण विधि) इत्यादि दिये गए हैं।

पाइय सिक्खा (प्राकृत शिक्षा) भाग-3

'पाइय सिक्खा भाग-3' पुस्तक में मुनिश्री 108 प्रणम्यसागर जी ने प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी, प्राकृत संख्या, गोम्मटेश थुदि, प्राकृत कथा, प्राकृत सुभाषित वचन, प्राकृत में लेश्याओं, दस धर्मों, आचार्यों, ग्रन्थों, तीर्थक्षेत्रों तथा हरे फलों के नाम देने के साथ-साथ प्राकृत के संज्ञा सर्वनाम, शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूप, क्रिया विशेषण और प्राकृत के सामान्य नियमों की जानकारी तथा अभ्यास पाठ (वाक्य निर्माण विधि) इत्यादि दिये गए हैं।

पाइय सिक्खा (प्राकृत शिक्षा) भाग-4

'पाइय सिक्खा भाग-4' पुस्तक में मुनिश्री 108 प्रणम्यसागर जी ने प्राकृत भाषा की प्रारम्भिक जानकारी, प्राकृत संख्या, पंचमहागुरु भत्ति, सिद्ध-सुद-आइरिय-भत्ति, बोह-कहा (बोध कथा), प्राकृत लघु निबन्ध, राशियों के अनुसार बच्चों के प्राकृत में नाम के साथ-साथ प्राकृत भाषा के संज्ञा सर्वनाम, शब्दों के विभक्ति रूप, क्रियापदों के धातुरूपों, क्रिया-विशेषण और प्राकृत भाषा के सामान्य नियमों की जानकारी तथा अभ्यास पाठ (वाक्य निर्माण विधि) इत्यादि दिये गए हैं।

गोम्मटेस पडिमा भत्ती (20-11-2017, भिवानी, हरियाणा)

परम पूज्य मुनिश्री प्रणम्यसागर जी द्वारा गोम्मटेश्वर बाहुबली भगवान् की भावपूर्ण भक्ति प्राकृत भाषा में 30 गाथाओं में की गई है। यह स्तुति मुनिराज ने भिवानी के मन्दिर जी में दिनांक 20-11-2017 मगसिर सुदी दोज को लिखी।

जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य :-

उत्कृष्ट आत्म-साधना पथ के राही तथा साहित्य के विविध आयामों को स्पर्श कर चिन्तन, मनन और दर्शन की त्रिवेणी प्रवाहित करने वाले मुनि श्री प्रणम्यसागर की यह एक महत्त्वपूर्ण कृति है- जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य एक ऐतिहासिक उपन्यास है। मुनिश्री ने जैन पुरातत्त्व, शिलालेख, पाषाण-फलक, विविध इतिहास - ग्रन्थ एवं जैन शास्त्रों-पुराणों के आधार पर प्रसिद्ध सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन के विविध पक्षों का रोचक वर्णन किया है। इस कथानक में चन्द्रगुप्त के साथ-साथ चाणक्य का जीवन-दर्शन भी समाहित है। चाणक्य के अभ्युदय तथा चाणक्य द्वारा एक सम्राट् की खोज उपन्यास की दो महत्त्वपूर्ण घटनाएँ तो हैं ही, अन्तिम श्रुतकेवली आचार्य भद्रबाहु के सम्पर्क में आकर सम्राट् के हृदय-परिवर्तन और मुक्ति की राह पर चल पड़ने की जिस रोचक कथा को लेखक ने उपन्यास का विषय बनाया है, वह अपने में अद्भुत है। पुस्तक के परिशिष्ट में एक शब्दकोश भी दिया गया है, ताकि क्लिष्ट सैद्धान्तिक शब्दों का अर्थ पाठक आसानी से समझ सकें।

प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु :-

मुनि श्री ने प्राकृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु ऑनलाइन पाठ्यक्रम तैयार किया है आपके निर्देशन में वर्तमान में **36 ऑनलाइन पाठशालाएं** चल रहीं हैं जिनमें लगभग 30000 लोगों ने ऑनलाइन माध्यम से प्राकृत भाषा को सीखा है। पूज्य मुनि श्री ने प्राकृत भाषा के प्रचार प्रसार में एक नई क्रांति ला दी है। वह भाषा जिसे कोई पढ़ना नहीं चाहता था कितने ही लोगों को यह भी नहीं मालूम था कि प्राकृत भी कोई भाषा है, आज उन लोगों ने भी प्राकृत सीख ली है और वर्तमान में हजारों लोग प्राकृत भाषा को सीखने का प्रयास कर रहे हैं।

अर्ह गुरुकुलम् :-

उत्कृष्ट आत्म साधना पथ के राही, साहित्य के विविध आयामों को स्पर्श कर चिन्तन, मनन और दर्शन की त्रिवेणी प्रवाहित करने वाले मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज के आशीर्वाद से अर्हम गुरूकुलम की स्थापना की गई जिसका उद्देश्य अध्यात्म और योग की प्रभावना करना है। ध्यान और योग के क्षेत्र में यह अद्वितीय कार्य मुनि श्री ने किया है, अनेक लोगो ने अर्हंयोग से अपने जीवन को सुखी व स्वस्थ्य बनाया है।

मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज का बौद्धिक एवं साधनात्मक व्यक्तित्व :-

मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज का व्यक्तित्व एक ओर गहन साधना से जुड़ा है, तो दूसरी ओर शास्त्राध्ययन से। उनका अध्ययन आगमिक, दार्शनिक, भाषावैज्ञानिक तीनों दृष्टियों से संतुलित है। इसी संतुलन के कारण वे प्राकृत साहित्य को केवल पांडित्य का विषय न बनाकर आत्मोन्नति और सामाजिक चेतना का साधन बनाते हैं।

प्राकृत आगमिक ग्रंथों का गहन अध्ययन एवं व्याख्या :-

मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज ने अपने प्रवचनों में अनेक मूल प्राकृत आगमिक ग्रंथों को आधार बनाया है, जिनमें प्रमुख हैं - प्रवचनसार, तत्त्वार्थ सूत्र, अष्टपाहुड इन ग्रंथों की गाथाओं का वे - शाब्दिक विश्लेषण, व्याकरणिक स्पष्टता, दार्शनिक तात्पर्य, व्यवहारिक अनुप्रयोग, चारों स्तरों पर विवेचन करते हैं। यह पद्धति प्राकृत साहित्य को केवल पाठ्य नहीं, बल्कि जीवन-दर्शन बनाती है।

प्राकृत भाषा की मौलिकता पर बल :-

समकालीन अध्ययन में प्राकृत को प्रायः संस्कृत की अपभ्रष्ट भाषा मान लिया जाता है। मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज इस दृष्टिकोण का स्पष्ट रूप से खंडन करते हैं। उनके अनुसार - प्राकृत जैन श्रमण परम्परा की स्वतंत्र भाषा है, यह जनसामान्य की भाषा है, इसमें दर्शन की सहज अभिव्यक्ति है, वे प्राकृत को साधना की भाषा मानते हैं, न कि केवल शास्त्र की। पूज्य मुनि श्री प्रणम्य सागर जी महाराज, संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के अधिकारी विद्वान है। आपने अपनी अप्रतिम प्रतिभा से संस्कृत, हिन्दी व अंग्रेजी के साथ-साथ प्राकृत भाषा में साहित्य सृजन किया है। आपने शौरसेनी प्राकृत

भाषा में तित्थयर भावना, धम्म कहा, अष्ट पाहुड पर नंदिनी टीका, दार्शनिक प्रतिक्रमण, प्राकृत रचना भास्कर तथा प्राकृत शिक्षा भाग एक से चार तक, पाइय भत्ति साहित्य की रचना की है।

प्रवचन में प्राकृत गाथाओं का प्रयोग :-

मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज की प्रवचन-शैली की एक विशेषता यह है कि वे मूल प्राकृत गाथाओं का यथासंभव प्रयोग करते हैं। पहले गाथा का पाठ, फिर उसका अर्थ, तत्पश्चात भावार्थ और व्यावहारिक संदर्भ इस प्रक्रिया से श्रोताओं में प्राकृत भाषा के प्रति स्वाभाविक रुचि विकसित होती है।

प्राकृत साहित्य और नैतिक–आर्थिक दृष्टि :-

मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज प्राकृत साहित्य में निहित - अपरिग्रह, संयम, सीमित उपभोग, परस्परोपग्रहो जीवना, जैसे सिद्धांतों को आर्थिक एवं सामाजिक संदर्भों से जोड़कर प्रस्तुत करते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि प्राकृत साहित्य केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक और आर्थिक दर्शन का भी मूल स्रोत है।

शोधार्थियों और अकादमिक जगत पर प्रभाव :-

मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज के विचार - जैन दर्शन, प्राकृत साहित्य, आगमिक अर्थशास्त्र, पर कार्य कर रहे शोधार्थियों के लिए प्रेरणास्रोत बने हैं। उनके प्रवचनों और विचारों से अनेक शोध-विषय विकसित हुए हैं, विशेषतः - प्राकृत आगमों में सामाजिक चेतना, जैन नैतिक अर्थशास्त्र, अहिंसा आधारित विकास दृष्टि आदि। आप शोधार्थियों के किये समय समय पर विभिन्न सेमिनार, संगोष्ठियाँ भी आयोजित करवाते हैं।

पाण्डुलिपि कार्यशाला :-

पूज्य मुनि श्री के आशीर्वाद से दिल्ली महानगर के दरियागंज में त्रिदिवसीय पाण्डुलिपि कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसमे पाण्डुलिपि संरक्षण का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

संस्कृत भाषा में मौलिक काव्य ग्रन्थ-

1. स्तुति पत्र (इस कृति में निम्नलिखित स्तुतियाँ हैं)

i. प्रार्थना	ii. वीराष्टकम्	iii भरताष्टकम	iv. शारदाष्टकम्
v. कुन्दकुन्दाष्टकम्	vi. समन्तभद्राष्टकम्	vil. शान्त्यष्टकम्	viii. ज्ञानाष्टकम्
ix. विद्याष्टकम्	x. मौनाष्टकम्	xi. निजबोधाष्टकम्	xi. आ. श्री ज्ञानसागर प्रशस्ति पत्र
xiii. आचार्य श्री विद्यासागर पूजन			

2. श्रायस पथ

3. सिद्धोदयाष्टकम्

4. श्री वर्धमान स्तोत्र

5. अनासक्त महायोगी (आचार्य श्री का जीवनवृत)

6. उपयोग शतकम्

7. अहँ अष्टाङ्ग योग शतकम्

8. आ. श्री शान्तिसागर स्तुति शतकम्

9. श्री शान्तिनाथ स्तोत्र (शतकम्)

10. गोवैभवशतकम् (आयुर्वेद सम्बन्धी)

संस्कृत भाषा में टीका ग्रन्थ

1. लिङ्गपाहुड (नन्दिनी टीका)

2. शील पाहुड़ (नन्दिनी टीका)

3. दर्शन पाहुड़ (नन्दिनी टीका)

4. चारित्र पाहुङ (नन्दिनी टीका)

5. भाव पाहुङ (नन्दिनी टीका)

6. समाधि तन्त्र (आर्हतभाष्य)

7. चैतन्य चन्द्रोदय (चन्द्रिका टीका)

8. बारसाणुवेक्खा (कादम्बिनी टीका)

9. आत्मानुशासन (स्वस्ति टीका)

10. पुरुषार्य सिद्ध्युपाय (मंगला टीका)

11 प्रश्नोत्तर रत्नमालिका ('नीति-पथ)

12. तत्त्वार्थ सूत्र (तत्त्व संदीपिनी टीका, संस्कृत-प्राकृत)

13. संस्कृत एवं प्राकृत भक्ति (आठ भक्तियों की टीका)

हिन्दी में अनुवादित ग्रन्थ-

1. सत्कर्म पंजिका

2. दश भक्ति टीका

3. प्रवचनसार (सरोज भास्कर टीका)

4. कथा कोश

5. सत्य शासन परीक्षा

6. युक्त्यनुशासन

7. नाममाला (भाष्य)

8. सत्संख्यादि अनुयोगद्वार

9. पात्रकेसरी स्तोत्र

10. अद्याष्टक स्तोत्र

11. संन्यास एषोस्तु किमात्मघातः

12. चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तुति (आ. माघनन्दि)

13. नियमसार

14. समयसार

15. परीक्षामुख

16. प्रतिक्रमण-ग्रन्थत्रयी

पद्यानुवाद

1. पुरुषार्थ सिद्धयुपाय
2. प्रश्नोत्तर रत्नमालिका
3. तत्त्वार्थ सूत्र
4. पात्र केसरी स्तोत्र
5. कल्याणमन्दिर स्तोत्र
6. श्री वर्धमान स्तोत्र
7. मंगलाष्टक
8. माघनन्दि कृत अभिषेक पाठ
9. उपयोग शतक

प्रवचन ग्रंथ

1. वारसाणुवेक्खा
2. नई छहढाला प्रवचन
3. परमात्म योग (समाधि तन्त्र)
4. जीव विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-2)
5. मनो विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-6)
6. लोक विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-3, 4)
7. व्रत विज्ञान (तत्त्वार्थ सूत्र अध्याय-7)
8. अध्यात्म योग (इष्टोपदेश)
9. श्री वर्धमान स्तोत्र

10 दव्य संग्रह

अन्य मौलिक कृतियाँ

1. युगद्रष्टा (भगवान ऋषभदेव पर उपन्यास)
2. जैन सम्राट् चन्द्रगुप्त मौर्य
3. खोजो मत पाओ (लाइफ मैनेजमेन्ट)
4. आलेख पथ (20 सैद्धान्तिक आलेख)
5. समयसार का ज्ञानी आत्मा कौन?
6. अन्तगूंज (भजन एवं हाइकू)
7. लहर पर लहर (कविता संग्रह)
8. बेटा! (शिक्षाप्रद सूक्तियाँ)
9. नई छहढाला
10. लक्ष्य (जीवंधर चरित्र)
11. मुनि सुव्रतनाथ विधान
12. अर्हम् दोहावली
13. अर्हं ध्यान योग
14. जिंदगी क्या है? (प्रवचन ग्रन्थ)

संकलन

1. संवाद (आचार्य श्री और बाबा रामदेव की चर्चा)

2. A Talk (संवाद का अंग्रेजी अनुवाद)

3. पुरुषार्थ सिद्ध्युपाय अनुशीलन

अग्रेजी भाषा में

1. Fact of Fate (articles)

2. Twelve Contemplation

3. I Love my Soul

न्याय विषयक ग्रन्थ :- न्याय सूत्रम्

जैन मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज का प्राकृत साहित्य को अवदान बहुआयामी है। वे

- प्राकृत भाषा को जीवंत परम्परा के रूप में स्थापित करते हैं।
- आगमिक दर्शन की मौलिकता की रक्षा करते हैं।
- आधुनिक समाज में प्राकृत भाषा की प्रासंगिकता सिद्ध करते हैं।

अतः यह कहा जा सकता है कि मुनि प्रणम्य सागर जी महाराज समकालीन जैन परम्परा में प्राकृत साहित्य के सशक्त संवाहक, व्याख्याता और संरक्षक हैं।